गुरु चेतना : शिक्षक पेशेवर विकास-कर्नाटक सरकार की एक पहल

रुद्रेश एस.

'शिक्षक की स्थिति समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रकृति को दर्शाती है; कहा जाता है कि कोई भी व्यक्ति अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है' - इस तरह के उद्बोधन सही भी हैं क्योंकि शिक्षक मानव में ज्ञान की शाश्वत खोज करने के लिए एक प्रेषक, प्रेरक और समर्थक की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम सभी एक ऐसे अच्छे समाज की आकांक्षा करते हैं जो मानवीय, न्यायसंगत और टिकाऊ हो। यह माना जाता है कि स्कूल शिक्षा इसके लिए आधार प्रदान करती है। शिक्षा वाकई अहिंसक और अनवरत तरीक़े से ऐसे समाज का निर्माण कर सकती है। भारत में मौलिक अधिकारों में संशोधन करके यह प्रयास किया गया है कि हर व्यक्ति को शिक्षा मिले और निशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित किया गया है। इसके परिणामस्वरूप यह कोशिश भी की जा रही है कि प्रत्येक बच्चे को एक ऐसी स्कूली शिक्षा मिले जो गुणवत्तापूर्ण हो। निजी स्कूलों में कमजोर परिवार के बच्चों के लिए सीटों का आरक्षण उसी का हिस्सा है। इसके माध्यम से प्रत्येक बच्चे की शिक्षा सरकार का एक जनादेश बन गई। केन्द्र और राज्य, दोनों सरकारें अपने सभी बच्चों के लिए स्कूल की आसान पहुँच सुनिश्चित करने और विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से नियमित उपस्थिति को बढ़ावा देने के लिए सर्वोत्तम प्रयास कर रही हैं। भारत ने नामांकन के मामले में बहुत कुछ हासिल किया है और प्राथमिक स्कूलों में विद्यार्थियों की उपस्थिति के उद्देश्य को काफ़ी हद तक पूरा किया है। जिस मुद्दे को सम्बोधित नहीं किया गया है वह है शिक्षा की गुणवत्ता। एएसईआर, एनएएस जैसी कई रिपोर्टों ने विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में कमियों की पहचान की। यह बात इन दिनों स्कूली शिक्षा में गम्भीर मुद्दा बन गई है और इसे स्कूली शिक्षा में एक महत्त्वपूर्ण सरोकार के रूप में पहचाना गया है। शिक्षा की गुणवत्ता काफ़ी हद तक शिक्षकों और कक्षा के साथ उनकी संलग्नता से निर्धारित होती है। शिक्षक की पेशेवर क्षमताएँ स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में योगदान करती हैं और साथ में अन्य चीज़ों की भी आवश्यकता होती है जैसे बुनियादी ढाँचा, विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात स्कूल नेतृत्व आदि।

भारत के सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों में समस्याएँ हैं। दोनों कार्यक्रम अल्पकालिक अवधि वाले हैं, अतः विषयों के शिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करके विद्यार्थियों के विविध प्रकार और स्कूलों के सन्दर्भ के लिए शिक्षकों को तैयार करने में असमर्थ हैं। यह स्पष्ट है कि शिक्षकों को स्कूल के सन्दर्भ में उत्पन्न होने वाली ज़रूरतों और माँगों के सम्बन्ध में तैयार किया जाना चाहिए जिससे वे स्कूल के ज्ञान, शिक्षार्थियों एवं अधिगम की प्रक्रिया के सवालों के साथ जुड़ सकें। समाज में होने वाले व्यापक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों के हिसाब से, समय-समय पर स्कूल प्रणाली और शिक्षकों की अपेक्षाएँ बदलती रहती हैं। यह बात शिक्षक समुदाय में व्यावसायिक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए शिक्षक-शिक्षा का पुनर्निर्माण करने पर ज़ोर देती है।

शिक्षक-शिक्षा को फिर से डिज़ाइन करने के पक्ष में कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :

1. लघु अवधि के सेवा-पूर्व कार्यक्रम केवल कुछ ऐसे बुनियादी परिप्रेक्ष्यों का निर्माण कर पाएँगे जिनका सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा से बहुत कम सम्बन्ध होगा और जिससे स्कूल के शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण पेशेवर ज़रूरतें पूरी नहीं होंगी।
2. सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा के सरोखन को आज तक पर्याप्त रूप से सम्बोधित नहीं किया गया है।
3. सेवा-पूर्व और सेवाकालीन कार्यक्रम दोनों में सिद्धान्त और व्यवहार के बीच का परस्पर सम्बन्ध कमज़ोर है।
4. आज के शिक्षकों को निरन्तर बदलती रहने वाली शिक्षा प्रणाली में होने वाले प्रतिमान के बदलावों से परिचित होना चाहिए। इसके लिए बुनियादी अवधारणाओं और शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में ज्ञान और समझ को बढ़ाने की आवश्यकता है और सेवा-पूर्व प्रशिक्षण में यह इस बात का पर्याप्त रूप से ध्यान नहीं रखा जाता है तथा साथ ही सेवाकालीन प्रशिक्षण का समय कम होने के कारण अन्तराल बना रहता है।

5. एक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए व्यक्ति को शिक्षण सम्बन्धी जिस समझ या क्षमताओं और प्रवृत्ति की आवश्यकता होती है, वर्तमान सेवाकालीन पेशेवर विकास कार्यक्रम अक्सर उन्हें विकसित करने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं होते हैं।
6. शिक्षक-शिक्षा की प्रक्रियाएँ शिक्षक को एक चिन्तनशील पेशेवर बनाने में विफल होती हैं।
7. सेवाकालीन कार्यक्रम अधिकतर पाठ्यपुस्तक सम्बन्धी मुद्दों जैसे विषय के कठिन बिन्दु आदि पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और शिक्षकों में रचनात्मक शिक्षण के साथ संकल्पनात्मक और गहन समझ का निर्माण नहीं करते।
8. कई मामलों में, विशेष रूप से सेवाकालीन कार्यक्रमों में वर्तमान वर्ष के कार्यक्रमों/प्रशिक्षण का पिछले और आने वाले वर्षों के कार्यक्रमों/प्रशिक्षण के साथ तालमेल नहीं होता है। कार्यक्रमों को अलग-अलग टुकड़ों में आयोजित किया जाता है।
9. एक कमी यह भी है कि ज़िला और ब्लॉक स्तरों में पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित और अपेक्षित गुणवत्ता वाले संसाधक नहीं मिल पाते।
10. सोपानी रणनीति के कई स्तर होने से संचरण में भारी हानि होती है।
11. कार्यक्रम/मॉड्यूल केन्द्रीय रूप से डिज़ाइन किए गए हैं जिनमें शिक्षकों की ज़रूरतों और रुचियों का ध्यान नहीं रखा गया है।

इस स्थिति में पाठ्यक्रम के प्रभावी संचालन और इन अन्तरालों को पाटने के लिए शिक्षक का निरन्तर पेशेवर विकास बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। आज इसी प्रक्रिया के माध्यम से हज़ारों बच्चे निकल रहे हैं और ऐसे संसाधनों की कमी है जो इस कमी को दूर करने के लिए कारगर सिद्ध हों। इसके लिए दीर्घकालिक दृष्टि और एक ऐसी रूपरेखा की आवश्यकता है जो सेवाकालीन कार्यक्रम के उपरोक्त मुद्दों को प्रभावित करने वाले हर सम्भव कारक पर विचार करे और शिक्षकों को एक सार्थक अनुभव प्रदान करने का प्रयास करे।

सार्वजनिक शिक्षण विभाग, कर्नाटक सरकार ने गुरु चेतना के नाम से राज्य में सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम को सुधारने का चुनौतीपूर्ण कार्य किया है। इस पहल का उद्देश्य सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों से सम्बन्धित सरोकारों को दूर करना और शिक्षक विकास के प्रयासों को सार्थक और प्रासंगिक बनाना है। दृष्टिकोण, सामग्री और साथ ही कार्यक्रम के संचालन को फिर से तैयार करने के इस व्यापक कार्य के साथ ही शिक्षक-ट्रैकिंग और प्रबन्धन प्रणाली को प्रारम्भ करने का कार्य अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के सहयोग से क्रियान्वित किया जा रहा है।

राज्य ने सेवाकालीन शिक्षकों के लिए एक पेशेवर विकास योजना की कल्पना की है। इस योजना में पिछले दशक की अन्तर्दृष्टि और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और शिक्षक-शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 जैसे राष्ट्रीय दस्तावेज़ों को ध्यान में रखा गया है जिससे कि शिक्षक चिन्तनशील बनें, पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, और पाठ्यपुस्तकों पर सवाल उठाने में सक्षम हों, सामुदायिक ज्ञान को शामिल करके स्कूल पाठ्यक्रम का संवर्धन कर सकें और सिद्धान्त तथा व्यवहार के बीच सम्बन्ध स्थापित कर सकें।

कार्यक्रम में अपनाए गए प्रमुख सिद्धान्तों पर नीचे चर्चा की गई है।

1. योजना दीर्घकालिक होनी चाहिए और शिक्षकों के पेशेवर विकास में सहायक होनी चाहिए। सेवाकालीन शिक्षक-शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो सुसंगत होनी चाहिए न कि छिटपुट 'एक-बार' होने वाले सत्र; शिक्षक विकास की दीर्घकालिक योजना शिक्षकों को समग्र रूप से विकसित होने का मौक़ा देती है।
2. इसमें सीखने के तरीक़ों के बीच एक संयोजन होना चाहिए जिसमें विशेषज्ञों द्वारा संचालन हो, सहकर्मी-अधिगम और आत्म-अधिगम हो और एक विकेन्द्रीकृत आत्मनिर्भर अधिगम का अवसर प्रदान किया जाए जो आत्म-अधिगम और सहकर्मी-अधिगम को बढ़ावा दे क्योंकि ये बातें बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।
3. शिक्षक अपने स्कूलों में जिन समस्याओं का सामना करते हैं और जो सभी कक्षाओं और विषयों के लिए प्रासंगिक हैं, उनका जवाब इन कार्यक्रमों में दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में इस प्रकार की व्यापकता हो तो लम्बी अवधि तक शिक्षकों का जुड़ाव बना रहेगा और जिससे निरन्तर व सम्बद्ध अधिगम के अवसरों का निर्माण हो सकेगा।
4. इसमें शिक्षकों को चुनने का विकल्प होना चाहिए ताकि वे कई मंचों के माध्यम से अपने लिए प्रासंगिक चीज़ों का उपयोग कर सकें, उदाहरण के लिए कार्यशालाएँ, सेमिनार, अध्ययन समूह आदि।
5. शिक्षक के विकास के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री को शिक्षा के दृष्टिकोण, विषय के परिप्रेक्ष्य,

विषय सामग्री और शिक्षाशास्त्र की दृष्टि से व्यापक होना चाहिए।

6. सभी कार्य शैक्षिक विचारों के एक सुसंगत समूह द्वारा निर्देशित किए जाने चाहिए, उदाहरण के लिए भारतीय समाज में स्कूल की भूमिका, बच्चे कैसे सीखते हैं, प्रत्येक विषय की प्रकृति और शिक्षण विधि, बच्चे का शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, नैतिक विकास क्यों आवश्यक है और ये सारी बातें शिक्षक-शिक्षा के सभी कार्यक्रमों के सभी रूपों में झलकनी चाहिए।

शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी शिक्षक-शिक्षा से सम्बन्धित कमियों को सम्बोधित करने के लिए प्रतिबद्ध थे। कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि इसमें प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव के अधिकारियों से लेकर प्रत्येक स्कूल के शिक्षकों की भागीदारी थी। प्रथम वर्ष के कार्यक्रम को लागू करने के लिए यह प्रयास दो साल तक जारी रहा। योजना की दीर्घकालिकता और शिक्षकों को अपने पेशेवर विकास के लिए अपनी आवश्यकता और रुचि के अनुसार मॉड्यूल चुनने की अनुमति देने के मार्ग को पाँच साल के लिए निर्धारित किया गया।

अवधारण से लेकर निष्पादन तक इस कार्यक्रम को चार चरणों में तैयार किया गया था – (क) पाठ्यक्रम विकास, (ख) मॉड्यूल विकास, (ग) संसाधक विकास, (घ) कार्यक्रम का शुभारम्भ।

(क) पाठ्यक्रम विकास

यह पाठ्यक्रम पूरे कर्नाटक के चुने हुए शिक्षकों, शिक्षक-शिक्षकों व विषय के विशेषज्ञों और अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के कुछ सदस्यों द्वारा सहयोगात्मक रूप से विकसित किया गया है। इस समूह ने शिक्षकों की ज़रूरतों के साथ-साथ राष्ट्रीय दस्तावेज़ों में व्यक्त की गई शिक्षकों की अपेक्षाओं पर विचार किया और बड़ी सावधानी के साथ इस पाठ्यक्रम को तैयार किया। पाठ्यक्रम की इस रूपरेखा का विकास शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण की योजना बनाने की दिशा में पहला क़दम था जिससे कि शिक्षकों के लिए एक मज़बूत और निरन्तर चलने वाले पेशेवर विकास कार्यक्रम को सक्षम किया जा सके। पाठ्यक्रम में शिक्षकों के विकास के सन्दर्भ, सिद्धान्त, दृष्टिकोण, विषय, व्यावहारिकता, कक्षा अनुप्रयोग, शिक्षक संलग्नता के तरीक़ों और आकलन का वर्णन है। पाठ्यक्रमों और मॉड्यूल को विकसित करने के लिए शिक्षकों की अनेक व विविध आवश्यकताओं की संकल्पना करने का काफ़ी प्रयास किया गया है। यह एक व्यापक पाठ्यक्रम है जिसमें बाल विकास (उदाहरण के लिए बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं, सीखने का सामाजिक सन्दर्भ), स्कूल के विषयों और शिक्षण के तरीक़ों में प्रमुख अवधारणाओं को समझने का प्रयास भी शामिल है। यह शिक्षकों के विकास के लिए लगभग 250 थीमों का सुझाव देता है और प्रत्येक विषय पर शिक्षक के जुड़ाव एवं मॉड्यूलर अभिविन्यास के विभिन्न तरीक़ों का प्रस्ताव रखता है। एक मॉड्यूल/अवधारणा/विषय को रुचि और आवश्यकता के अनुसार 1-5 दिनों में लिया जा सकता है।

(ख) मॉड्यूल विकास

पाठ्यक्रम के सिद्धान्तों को अपनाकर मॉड्यूल विकसित किए गए। परामर्शदाताओं के मार्गदर्शन में शिक्षा विभाग के चुने हुए राज्य संसाधकों और अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के एक समूह ने लगभग पाँच महीने तक एक कठोर प्रक्रिया के माध्यम से मॉड्यूल विकसित किए। इन मॉड्यूलों को श्रेणीबद्ध किया गया है ताकि वे शिक्षकों की समझ के विभिन्न स्तरों पर प्रतिक्रिया दे सकें। दीर्घावधि योजना यह है कि शिक्षकों को चुनने के लिए 200-250 मॉड्यूल उपलब्ध कराए जाएँ। इन मॉड्यूलों में शिक्षा परिप्रेक्ष्य, विषय परिप्रेक्ष्य, प्रमुख अवधारणाएँ, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन सम्बन्धी बातें शामिल हैं जो एक-दूसरे के साथ एकीकृत हैं, अलग-थलग नहीं। वर्ष 2017-18 में शिक्षकों को विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान और शिक्षा के परिप्रेक्ष्य (हिन्दी व कन्नड़ा दोनों में) से सम्बन्धित 28 मॉड्यूल दिए गए। बाक़ी को बाद के वर्षों में दिया जाएगा। प्रत्येक मॉड्यूल को समीक्षा समिति की भागीदारी के साथ संचालित किया गया और उसकी समीक्षा की गई व उसमें सुधार किए गए।

(ग) स्रोत व्यक्ति विकास

कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर निष्पादित करने के लिए और ज़िलों में प्रशिक्षित स्रोत व्यक्तियों की अनुपलब्धता के मुद्दे को हल करने के लिए, प्रत्येक ज़िले के प्रत्येक मॉड्यूल के लिए चार मुख्य स्रोत व्यक्ति (मास्टर रिसोर्स पर्सन या एमआरपी) को लिखित और मौखिक परीक्षाओं के माध्यम से चुना गया था। प्रत्येक ज़िले में कुल 112 एमआरपी चुने गए। प्रत्येक एमआरपी को परिप्रेक्ष्य, सामग्री और शिक्षाशास्त्र के बारे में 10 दिनों का प्रशिक्षण दिया जाता है जिनमें से पाँच दिन मॉड्यूल सामग्री के लिए और पाँच दिन अतिरिक्त इनपुट के लिए होते हैं ताकि एमआरपी शिक्षकों के साथ पाँच दिनों तक जुड़ने में सक्षम हो सकें। कार्यक्रम में विकासशील शिक्षा परिप्रेक्ष्य (समाज, शिक्षा, बच्चों और शिक्षण को समझना), मॉड्यूल सामग्री से परे गहरी समझ और सत्रों के उदाहरणात्मक शिक्षण का प्रस्ताव दिया गया जिसमें प्रत्येक एमआरपी को प्रस्तुति के

अवसर दिए गए। इस प्रक्रिया में कई बैचों के माध्यम से एक महीने में लगभग 3500 एमआरपी को प्रशिक्षित किया गया।

(घ) कार्यक्रम का शुभारम्भ

कार्यक्रम का शुभारम्भ 5 सितम्बर 2017 को शिक्षक दिवस पर कर्नाटक के मुख्यमन्त्री द्वारा किया गया। शिक्षकों ने शिक्षक प्रशिक्षण प्रबन्धन प्रणाली (टीटीएमएस) में लॉग-इन करके वर्ष 2017-18 के लिए उपलब्ध 28 मॉड्यूलों के बारे में अपने विकल्प दिए। यह प्रणाली डेस्कटॉप और मोबाइल में उपलब्ध थी, जहाँ अधिकतर शिक्षक अपने विकल्प और कार्यशाला अनुसूची के ट्रैकिंग का प्रबन्धन करने के लिए मोबाइल ऐप का इस्तेमाल करते थे। टीटीएमएस के माध्यम से शिक्षकों के विकल्प, बैच बनाने, शिक्षकों को आमन्त्रित करने, प्रशिक्षण की योजना बनाने और शिक्षकों से फीडबैक लेने की पूरी प्रक्रिया की गई। राज्य स्तर की प्रक्रियाओं का प्रबन्धन राज्य शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण विभाग द्वारा किया गया था और इसका क्रियान्वयन सम्बन्धित डाइट (ज़िला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान) द्वारा किया गया था। तीन से चार महीने की अवधि में 34 ज़िलों में 28 मॉड्यूल वाला प्रशिक्षण लगभग 2000 बैचों में आयोजित किया गया। इस प्रक्रिया में 75000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

इससे सोपानी प्रणाली घटी क्योंकि प्रशिक्षित एमआरपी ज़िले में जाकर शिक्षकों को सीधे ही प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। संचालन और क्रियान्वयन की बुनियादी सुविधाओं की गुणवत्ता सुनिश्चित करना भी महत्त्वपूर्ण था। जैसे साफ़-सुथरे व काम में लाए जा सकने वाले शौचालय, सुरक्षित पेयजल, गुणवत्तापूर्ण भोजन, पर्याप्त रोशनी वाले हवादार स्थान, निर्बाध बिजली की आपूर्ति आदि। ये चीज़ें सम्बन्धित ज़िलों के डाइट द्वारा सुनिश्चित की गईं जिन्होंने मॉड्यूल की गुणवत्ता बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

भारत में ऐसा पहली बार हुआ कि शिक्षकों को इस तरह के बड़े पैमाने पर उनकी रुचि और ज़रूरतों के अनुसार मॉड्यूल चुनने की अनुमति दी गई थी।

ऐसा इसलिए सम्भव हुआ क्योंकि पूरे वर्ष इसे दृढ़ता के साथ चलाने में सरकार ने रुचि दिखाई और निरन्तर प्रयास किया। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव द्वारा एक विशेष मासिक बैठक आयोजित की गई थी जिसने प्रारम्भ से लेकर निष्पादन तक एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। डीएसईआरटी ने भी इस कार्यक्रम को पूरे मन से अपनाया जिसकी वज़ह से पूरे साल और सारी गतिविधियों के दौरान यह कार्यक्रम निर्बाध गति से चलता रहा। राज्य स्तर पर गठित कोर टीम ने प्रक्रियाओं की योजना बनाने, निगरानी और समीक्षा करने में मदद की और साथ ही समय सीमा का पालन करके कार्यक्रम को दृढ़ता दी तथा सभी स्तरों पर गुणवत्ता बढ़ाने में सहायता की। शिक्षकों ने चयन पर आधारित शिक्षक विकास की अवधारणा और एमआरपी की तैयारी की सराहना की, यह बात निष्पादन के बाद किए गए एक डिपस्टिक अध्ययन के बाद सामने आई। उन्होंने कार्यक्रम के सुचारु क्रियान्वयन और लम्बी अवधि के लिए शिक्षक विकास पर नज़र रखने के लिए टीटीएमएस की भूमिका को भी महत्त्वपूर्ण माना। मुख्यमन्त्री और शिक्षा मंत्री ने राज्य सरकार के बजट में और कई अन्य मंचों पर एक कार्यक्रम के रूप में गुरु चेतना का उल्लेख किया। इससे उसे अधिक वैधता मिली।

कार्यक्रम की संचार रणनीति ने इसे लोगों तक पहुँचाने में बहुत योगदान दिया। संचार रणनीति के अन्तर्गत एक माइक्रोसाइट विकसित किया गया था जहाँ शिक्षक कार्यक्रम और मॉड्यूल के बारे में सभी जानकारी प्राप्त कर सकते थे। शिक्षक बहुत पहले ही मॉड्यूल को डाउनलोड करके प्रशिक्षण सत्रों के लिए तैयार हो सकते थे। राज्य स्तर पर इसके शुभारम्भ का विशाल कार्यक्रम और शिक्षकों के पेशेवर विकास पर राज्य और ज़िला स्तर पर हुए कई सेमिनारों के बाद एक कार्यक्रम के रूप में गुरु चेतना के बारे में शिक्षकों की रुचि बढ़ी। इस सारी प्रक्रिया के माध्यम से 1.4 लाख शिक्षकों ने नामांकन किया और टीटीएमएस के माध्यम से चार प्राथमिकताओं में अपनी पसन्द व्यक्त की। इन संख्याओं को देखते हुए यह बात स्पष्ट हो गई कि शिक्षक गुणवत्तापूर्ण साहित्य और गुणवत्तापूर्ण प्रक्रियाएँ चाहते थे जिसने हितधारकों को आश्वस्त किया और पेशेवर विकास में रुचि को बढ़ाया।

चूँकि चुनौतियाँ थीं इसलिए सावधानीपूर्वक यह कोशिश की गई कि पाठ्यक्रम विकास से लेकर कार्यक्रम के निष्पादन तक की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए। यद्यपि आयोजन स्थल, भोजन आदि की गुणवत्ता पर स्पष्ट निर्देश दिए गए थे लेकिन शिक्षकों के फीडबैक को ध्यान में रखते हुए भविष्य में इनमें और अधिक सुधार करने पर ध्यान दिया गया। मॉड्यूल विकास और एमआरपी के विकास की प्रक्रियाओं में दो साल तक राज्य स्रोत व्यक्तियों में रुचि और धैर्य बनाए रखना मुश्किल था जो समूह के भीतर अस्थिरता का कारण बनी। हितधारकों के स्तर पर कार्यक्रम की अवधारणा की एक साझा समझ विकसित करना और सरकारी प्रणाली के स्तर पर समान गति बनाए रखना एक और चुनौती थी। चूँकि कार्यक्रम का पैमाना बहुत बड़ा था इसलिए सम्बन्धित ज़िलों को सम्बन्धित मुद्रित मॉड्यूल वितरित करना कठिन था, जिसके परिणामस्वरूप देरी हुई।

शुरुआत में यह चुनौती भी सामने आई कि कार्यक्रम में शामिल लोगों को इसकी सामग्री और प्रक्रियाओं की प्रकृति में किए गए प्रतिमान सम्बन्धी बदलाव के बारे में कैसे समझाया जाए उनके मन कई दशकों की धारणाएँ जड़ फैलाए बैठी हुई थीं। प्रारम्भ में उनसे खुलकर बात करवाने में कठिनाई हुई लेकिन अब 90 एसआरपी और राज्य के अधिकारी शिक्षक-शिक्षा के नए प्रतिमान के दूत बन चुके हैं।

कर्नाटक के लिए शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में गुरु चेतना एक अनूठा अनुभव था और अन्य राज्य कर्नाटक के इस अनुभव को समझने के लिए उत्सुक हैं। शिक्षकों के पेशेवर विकास में गुणवत्ता और सार्थकता के साथ संचालित चयन आधारित शिक्षक विकास का यह कार्यक्रम दीर्घकालिक, निरन्तर और संयोजित संलग्नता की अवधारणा पर आधारित है जिसे पूरे देश में फैलाने की ज़रूरत है। सबसे अधिक वांछनीय बात यह है कि सभी शिक्षकों को चिन्तनशील होना चाहिए और भारतीय संविधान में व्यक्त समाज बनाने में योगदान देना चाहिए।

रुद्रेश एस. अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के कलबुर्गी और यादगीर जिला संस्थानों के प्रमुख हैं। वे 2003 से फ़ाउंडेशन में कार्यरत हैं। वे शिक्षक पेशेवर विकास में रुचि रखते हैं। वे शिक्षक पेशेवर विकास पर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन और कर्नाटक सरकार की संयुक्त पहल में योगदान करते रहे हैं। उनसे *rudresh@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल